JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वरोजगार में संलग्नता हेतु ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (आरसेटी) कार्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन (कुमाऊँ मण्डल के विशेष संदर्भ में)

अहमद ताबिश (Ahamad Tabish)[1], डॉ. पी. एन. तिवारी (Dr. P. N. Tiwari)[2]

[1] शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, एस. बी. एस. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल. उत्तराखण्ड

[2] प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, एस. बी. एस. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय रूद्रपुर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल उत्तराखण्ड

सारांश

भारत के लिए बढ़ती बेरोजगारी सबसे बड़ी चुनौती है। भारत उन विकासशील देशों में से एक है, जहां बेरोजगारी और अल्परोजगार की समस्या बनी हुई है। वर्तमान में अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा प्रकाशित आंकड़े भारत में बेरोजगारी के सम्बंध में बेहद चिंताजनक है। आईएलओं आंकड़ों अनुसार भारत में 80 प्रतिशत से भी अधिक युवा बेरोजगार है। बेरोजगार युवाओं को स्वरोजगार के प्रति उन्नमुख कर उचित उद्यमिता प्रशिक्षण के माध्यम से उनके कौशल को बढ़ाने की जरूरत है। लाखों बेरोजगार युवा खास तौर पर ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों से जो उच्च/पेशेवर शिक्षा तक पहुंच नहीं पाते हैं लेकिन सफेदपोश नौकरियों की ओर अधिक उन्मुख होते हैं जो उपयुक्त नौकरियां न मिलने से विवशतः शहरी प्रभार का हिस्सा बन रहे है। सरकार ने देश में रोजगार के लिए कई नीतिगत पहल की शुरूआत की हैं। बेरोजगारी की गंभीर स्थिति से निपटने के लिए ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के रूप में एक अलग पहल की गई है। (अमनदीप और सुखदीप 2020) शोध पत्र का प्राथमिक उद्देश्य कुमाऊँ मण्डल में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान कार्यक्रमों की वर्तमान प्रगति व रोजगार सृजन पर प्रभाव का पता लगाना तथा प्रशिक्षुओं के व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों में संलग्नता क वरीयता का अध्ययन करना है। यह अनुसंधान कुमाऊँ मण्डल के आरसेटी लाभार्थियों से प्रश्नावली का उपयोग करके आंकड़ों को एकत्र किया गया था जिन्होंने वर्ष 2020–2021 के दौरान प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विभिन्न उद्यमी विकास गतिविधियों में भाग लिया। अध्ययन के परिणामों से संकेत मिलता है कि अधिकांश लाभार्थियों ने व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों में संलग्नता में स्वरोजगार को प्रथत वरीयता और वेतनिक नौकरी को द्वितीय तथा कृषि एवं पशुपालन कार्य को आखरी वरीयता दी है। अतः आरसेटी ने युवाओं को रोजगार के वैकल्पिक साधनों की ओर अभिप्रेरित कर स्वरोजगार के प्रति प्रोत्साति किया है।

आधार शब्द : कौशल विकास कार्यक्रम, आरसेटी, व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों में संलग्नता

प्रस्तावना

सर्वविदित है की देश की कुल आबादी का अधिकांश भाग गांवो में निवास करता है और भारत की जीडीपी में अधिकतम हिस्सा ग्रामीण भाग व कृषि गतिवधियो से ही पूर्ण होता है। वर्तमान में गांवो से पलायन एवं बेरोजगारी की समस्या चिंता का मुख्य विषय है यदि हाल के सरकारी रिपोर्टों पर नजर डाले तो पायेंगे कि बहुत से गांव खाली हो चुके है ओर कुछ होने के

कगार पर है। देश में कृषि क्षेत्र एवं जोत का प्रतिशत कम होता जा रहा है। अतः देश में बेरोजगारी एवं पलायन की समस्या तथा कृषि गतिविधियों की ओर युवाओं को आकर्षित करने हेतु उपाय स्वरूप कौशल विकास के माध्यम से उनकी क्षमता निर्माण कर स्थानीय संसाधनों, मानवपूंजी, प्रौद्योगिकियो के उपयोग से रोजगार के अवसरों का सृजन करना है।

भारत में युवा प्रतिनिधित्व को ध्यान केन्द्रित करतें हुए समुचित व समावेशी नीतियों का निर्माण नीतिगत रूप से किया जा रहा है। भारत युवा जनसांख्यिकीय लाभांश को सही दिशा प्रदान करके आत्मनिर्भर बना स्वरोजगार के प्रति उन्नमुख करने हेतु विभिन्न माध्यमों द्वारा प्रयासरत है वर्तमान में कौशल विकास को विशेष महत्व प्रदान कर इस पर मिशन स्तर से कार्य सम्पादित किया जा रहा है।

पूर्व साहित्य का अध्ययन

आयशा अफरोज (2018) ने उत्तराखण्ड राज्य में कौशल भारत अभियान के प्रति कर्मचारियों की रूचि व उनकी धारणा के साथ कौशल विकास की प्रभावशीलता पर अध्ययन किया हैं। अध्ययन में वर्णित है कि भारत एक ऐसा देश है जिसमें विभिन्न प्रकार के कार्यबल क्षमता है। कौशल विकास इन कार्यबलों को मजबूत एवं सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण कारक हैं।

के. सुन्दरम (2018) ने शोध अध्ययन में वर्णित किया है कि भारत में बढ़ते ज्ञान एवं तकनीकी अर्थव्यवस्था में कौशल और ज्ञान के पारिस्थितिकी तंत्र को पोषण करना महत्वपूर्ण है। भारत में 1.2 बिलियन (लगभग 860 मिलियन) आबादी में से 68 प्रतिशत कार्यबल संख्या है जो 15 से 64 वर्ष के आयु वर्ग की हैं इन्हे बेहतर संसाधनों से परिपूर्ण कर कुशल कार्यबल में बदल सकते है। दक्ष व कुशल कार्यबल आर्थिक विकास के योगदान में सहायक होंगें।

स्नेहा विकास कोटवाडेकर (2018) ने द्वितीयक समंकों का प्रयोग कर भारत में कौशल क्षमता और सरकार के कौशल विकास पहल के समक्ष चुनौतियों पर प्रकाश डाला है। अध्ययन में वर्तमान कौशल स्थिति की विवेचना करते हुए उल्लेख किया है कि भारत की औद्योगिक और आर्थिक विकास के गति में कुशल कार्यबल की आवश्यकता है। निष्कर्षतः कहा है कि भारत के पास विशाल जनसांख्यिकीय लाभ होने से वह विश्व में कुशल कार्यबल का प्रदाता बन सकता है। कौशल विकास पर रणनीतिक ढंग से कार्य करने की आवश्यकता है।

रीतू कुमरा (2019) ने आरसेटी की भूमिका पर शोध किया है। शोध प्रबंध में आरसेटी की विशेषताओं का वर्णन करते हुए ग्रामीण युवाओं की सशक्तीकरण पर आरसेटी के प्रभाव की विवेचना की हैं। शोध अध्ययन में कहा है कि अल्प अवधि में प्रवीणता में त्वरित गतिवृद्धि से युवाओं को सामर्थ्यवान बना उनकी अभिवृत्तियों में आत्मनिर्भरता के गुणधर्मों का विकास ही कौशल विकास कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य है।

अनिल कुमार और डॉ. निशा (2022) ने भारत की ज्वलंत समस्या (गरीबी और बेरोजगारी) को इंगित करते हुए कहा है कि कुशल कार्यबल की कमी बेरोजगारी की बढ़ती समस्या को जन्म देने में सहायक है इसके समाधान हेतु कौशल विकास कार्यक्रम प्रासंगिक है। अध्ययन में विवेचना की है कि कौशल विकास कार्यक्रम कुशल कार्यबल तैयार करने में उपयोगी है। शोध पत्र में सुझाया है कि कौशल विकास पहल एवं योजनाओं को सभी तक पहुँच हेतु लोकतांत्रिक जन भागीदारी आवश्यक है।

शोध की आवश्यकता

श्रमबल में आवश्यक कौशल गुणों की कमी की चुनौती के समाधान हेतु युवाओ को प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल से सुसज्जित करना अति वांछनीय है आरसेटी कार्यक्रम इन अपेक्षाओं के प्रति प्राथमिकी रूप से प्रयासरत है इसका मूल उद्देश्य कौशल युक्त कर आजीविका हेतु प्रशस्त करना है। शोध अध्ययन उत्तराखण्ड में संचालित आरसेटी कार्यक्रम के लाभार्थियों में विभिन्न व्यवसाय के स्वरूपों (व्यवसाय के स्रोतों) में उनकी वरीयता (रूचि) को जानने तथा कार्यक्रम के लक्षित परिणामों की

प्राप्ति हेतु सार्थक प्रयासों पर आधारित है। यह शोध समाज आरसेटी हितधारकों के लिए लाभप्रद होगा। यह अध्ययन कुमाऊँ मण्डल में आरसेटी के लाभार्थियों की व्यवसाय के विभिन्न स्रोतों में संलग्नता के वरीयता का अध्ययन हो सकेगा।

शोध उद्देश्य

1. कौशल विकास के परिप्रेक्ष्य में आरसेटी पहल का संक्षिप्त अध्ययन करना।
2. आरसेटी योजना की वर्तमान परिदृश्य का अध्ययन करना।
3. व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों में संलग्नता हेतु लाभार्थियों के वरीयता का अध्ययन करना।

परिकल्पना

H01 : कौशल विकसित कर स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित करने में आरसेटी की कोई भूमिका नहीं है।

H02 : लाभार्थियों के धारणाओं में जीविकोपार्जन हेतु व्यावसाय के विभिन्न स्वरूपों के बेहतर माध्यम के वरियता में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।

शोध प्रविधि

- **शोध अभिकल्प**–प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक प्रक्रति का सर्वेक्षण पर आधारित है।
- **समग्र**–कुमाऊँ मण्डल में आरसेटी के लाभार्थी
- **शोध क्षेत्र**– उत्तराखण्ड राज्य का कुमाऊँ मण्डल हैं।
- **समंक**– **प्राथमिक** आकड़ों को स्वयं शोधकर्ता द्वारा एकत्र किया गया जिसमें आकड़ों का संकलन आरसेटी द्वारा प्रदत्त लाभार्थियों की सूची से कार्यस्थलों पर जाकर प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से किया गया है। **द्वितीयक समंकों** को चयनित योजनाओं के सम्बंधित विभाग से प्राप्त सूचनाओं पत्र–पत्रिकाओं, पुस्तकों, अखबार, शोध पत्रों व शोध प्रबंध इत्यादि से एकत्रित कर विश्लेषित किया गया हैं।
- **न्यादर्श प्रक्रिया** समंको को एकत्रित करने के लिए प्रदेश के कुमाऊँ मण्डल के जनपदों (क्रमशः ऊधम सिंह नगर, नैनीताल, अल्मोड़ा, बागेश्वर, पिथौरागढ़, तथा चम्पावत) में उद्देश्यपूर्ण एवं सुविधाजनक न्यादर्श विधि से शोध जनसंख्या में से कुल 147 उत्तरदाताओं को न्यादर्श के रूप में शामिल किया गया हैं इनसे प्रश्नावली के माध्यम से सूचनाएं एकत्रित की गई है।

न्यादर्श आकार

तालिका संख्या 1 वर्ष 2020-2021 आधार वर्ष पर चयनित न्यादर्श विवरण

क्र0 सं0	जनपद	ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान		चयनित न्यादर्श
		कुल प्रशिक्षित	5% कुल प्रशिक्षित का	
1	ऊधम सिंह नगर	484	24.2	24
2	नैनीताल	378	18.9	19
3	अल्मोड़ा	562	28.1	28
4	बागेश्वर	506	25.3	25
5	पिथौरागढ़	466	23.3	23
6	चम्पावत	558	27.9	28
	योग	**2954**	**130.7**	**147**

नोट न्यादर्श में सन्निकटीकरण किया गया है

(Barteltt, et al. 2001) के शोध पत्र Determining Sample Size for Research Activities में गणनाकार जनसंख्या हेतु कुल जनसंख्या का 5 प्रतिशत न्यादर्श अध्ययन के लिए पर्याप्त माना गया हैं। पूर्ववत अध्ययनों में भी 5 प्रतिशत न्यादर्श को लेकर शोध कार्य किये गये है। अतः इस दृष्टांत को रेखांकित करते हुए अध्ययन हेतु 5 प्रतिशत कुल जनसंख्या का न्यादर्श हेतु चयन किया गया है।

सीमाएं

- यह अध्ययन कुमाऊँ मण्डल के जनपदों में आरसेटी के भूमिका और उसके लाभार्थियों की धारणा तक सीमित है।
- आरसेटी के सम्बंध में कई पहलू और हितधारक है जिनकी अलग–अलग भूमिकाएं है इन सभी पर शोध में चर्चा नहीं की गई है।
- न्यादर्श कुमाऊँ मण्डल के प्रत्येक जनपद के मुख्यालयों के भीतर स्थित कौशल केन्द्र के नजदीकी क्षेत्रों से एकत्रित किया गया है।
- चिन्हित कौशल विकास कार्यक्रमों में उपर्युक्त द्वितीयक आंकड़ें वर्ष 2021–22 तक की अवधि के है जो कि न्यादर्श चयन का आधार है और इनके आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये है।

कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

भारत में कौशल विकास प्रयासों को समेकित कर उन्हे प्रोत्साहित करने हेतु संस्थागत अवसंरचना के निर्माण के साथ विभिन्न कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन मिशन स्तर पर किया जा रहा है जिसके अर्न्तगत विभिन्न अवधि (जैसे अल्प अवधि एवं दीर्घ अवधि) के कोर्स संचालित कर युवाओं के क्षमता निर्माण के साथ उनके सर्वांगीण विकास पर महत्व दिया जा रहा है। यह योजनाए भारतीय युवाओ के क्षमता निर्माण के साथ अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने मे अहम भूमिका अदा कर रही है जिससे रोजगार के नये अवसरो का सृजन एवं उद्यमियों के लिए नये द्वार खुल रहे हैं।

कौशल विकास भारत की ज्वलंत समस्या गरीबी एवं बेरोजगारी के निवारण में और साथ ही कुशल जनशक्ति को सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण साधन है। हर्ष (2020) सरकार इस ओर अपना ध्यान आर्कषित करते हुए विभिन्न कौशल कार्यक्रम संचालित कर युवाओं को स्वरोजगार हेतु प्रेरित एवं व्यवसाय स्थापित करने में वित्तीय एवं तकनीकी मदद कर रही है। अतः शोध अध्ययन में आरसेटी को विस्तृत रूप से विवेचित किया गया है।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान

यह विशिष्ट प्रयास श्री डी. विरेन्द्र हेगड़े द्वारा स्थानीय युवाओं पर ध्यान केन्द्रित करके श्री धर्मस्थल मंजुनाथेश्वर ट्रस्ट (एसडीएमई), केनरा और सिंडिकेट बैंकों द्वारा त्रिस्तरीय साझेदारी से शुरू किया गया पहल था। उन्होने देखा कि लाखों युवा खास तौर पर ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों से जो उच्च/पेशेवर शिक्षा तक पहुंच नहीं पाते हैं लेकिन सफेदपोश नौकरियों की ओर अधिक उन्मुख होते हैं जो उपयुक्त नौकरियां न मिलने से विवशतः शहरी प्रभार का हिस्सा बन रहे हैं। इस चुनौती से निपटने हेतु रूडसेटी की स्थापना की थी। सरकार ने देश में रोजगार के लिए कई नीतिगत पहल की शुरूआत की हैं। रूडसेटी की सार्थकता को रेखांकित कर बेरोजगारी की गंभीर स्थिति से निपटने के लिए 2008 में ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के रूप में एक अलग पहल की शुरूआत अखिल भारतीय स्तर पर रूडसेटी के सामान्य उद्देश्यों पर की। यह योजना युवाओं को रोजगार के वैकल्पिक स्रोतों के प्रति उन्नमुख करने तथा उद्यमिता कौशल विकसित करने हेतु कौशल प्रशिक्षण प्रदान किए जाते हैं।

ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (रूडसेटी) मॉडल प्रतिरूप है। (के. और सेंथिल 2022) ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान गरीबी कम करने में सहायक होने के साथ आय एवं रोजगार के अवसर सृजन करने में महत्वपूर्ण भूमिका

निभाते हैं। आरसेटी संस्थान भारत के लगभग सभी जिलों में स्थापित हैं। आरसेटी युवाओं को विभिन्न आर्थिक गतिविधियों के लिए गुणवत्तापूर्ण अल्प अवधि कौशल प्रशिक्षण प्रदान करते हैं और लाभार्थियों को ऋण लिंकेज प्रदान करके आरसेटी के माध्यम से स्वरोजगार शुरू करने के लिए सहायतार्थ समर्थन प्रदान करते हैं। यह निःशुल्क आवासीय कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर उद्यमी दृष्टिकोण विकसित करता है।

परिकल्पना परीक्षण

H01 : कौशल विकसित कर स्वरोजगार हेतु प्रोत्साहित करने में आरसेटी की कोई भूमिका नहीं है।

तालिका संख्या 2 कुमाऊँ मण्डल में आरसेटी प्रगति 2021-2022

क्रम संख्या	जनपद	कुल प्रशिक्षित	प्रतिशत (कुल योग का)	कुल प्लेसमेंट	प्रतिशत*	नियोजित क्षेत्र
1	ऊधम सिंह नगर	484	16.38	371	76.65	80 प्रतिशत से अधिक स्वरोजगार में संलग्न
2	नैनीताल	378	12.79	278	73.55	
3	अल्मोड़ा	562	19.02	287	51.06	
4	बागेश्वर	506	17.13	360	71.14	
5	पिथौरागढ़	466	15.77	337	72.31	
6	चम्पावत	558	18.89	418	74.91	
	समेकित योग	**2954**	**100**	**1851**	**62.67**	

स्रोत–क्षेत्र सर्वेक्षण पर आधारित आरसेटी संस्थान द्वारा प्रदत्त आंकड़े अनुसार

(* प्लेसमेंट प्रतिशत= कुल प्लेसमेंट *100 / कुल प्रशिक्षित)

कुमाऊँ मण्डल में आरसेटी प्रगति 2021-2022 का बहुदण्ड चित्र द्वारा प्रस्तुतिकरण

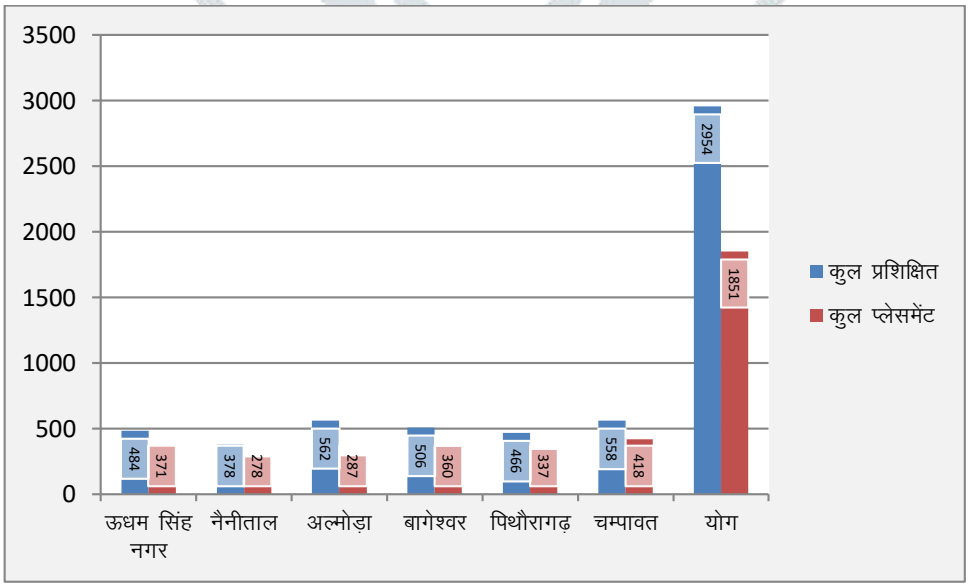

विश्लेषण एवं निर्वचन : उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है की आरसेटी योजना के तहत उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल में 2020–21 में कुल प्रशिक्षित लाभार्थी 2954 है तथा कुल प्रशिक्षित में से कुल प्लेसमेंट 1851 है जिसका प्लेसमेंट दर 62.67 प्रतिशत है।

- कुमाऊँ मण्डल में जनपदवार स्थिति का अवलोकन करे तो **ऊधम सिंह नगर जनपद** में कुल प्रशिक्षित लाभार्थी 484 है जिसमें कुल प्लेसमेंट 371 है जिसका प्लेसमेंट दर 76.65 प्रतिशत है।
- **नैनीताल** जनपद में कुल प्रशिक्षित लाभार्थी 378 है जिसमें कुल प्लेसमेंट 278 है जिसका प्लेसमेंट दर 73.55 प्रतिशत है।
- **अल्मोड़ा** जनपद में कुल प्रशिक्षित लाभार्थी 562 है जिसमें कुल प्लेसमेंट 287 है जिसका प्लेसमेंट दर 51.06 प्रतिशत है।
- **बागेश्वर** जनपद में कुल प्रशिक्षित लाभार्थी 506 है जिसमें कुल प्लेसमेंट 360 है जिसका प्लेसमेंट दर 71.14 प्रतिशत है।
- **पिथौरागढ़** जनपद में कुल प्रशिक्षित लाभार्थी 466 है जिसमें कुल प्लेसमेंट 337 है जिसका प्लेसमेंट दर 72.31 प्रतिशत है।
- **चम्पावत** जनपद में कुल प्रशिक्षित लाभार्थी 558 है जिसमें कुल प्लेसमेंट 418 है जिसका प्लेसमेंट दर 74.91 प्रतिशत है।

निष्कर्ष : इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु कुमाऊँ मण्डल में आरसेटी कार्यक्रम के 2021–22 की प्रगति को लिया गया है जिसका विवरण उपरोक्त तालिका संख्या 2 में है इस दृष्टांत सिद्ध होता है कि आरसेटी कार्यक्रम कौशल विकसित कर स्वरोजगार में अधिकांश संलग्न करने हेतु प्रयासरत है।

H02 : लाभार्थियों के धारणाओं में जीविकोपार्जन हेतु व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों के संलग्नता में बेहतर माध्यम के वरियता में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है।

आरसेटी योजना के लाभार्थियों के प्रतिक्रिया के आधार पर व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों में उनकी संलग्नता के बेहतर विकल्पों की धारणा को जानने का प्रयास किया गया है इस हेतु उनकी वरीयता को गैरेट रैंकिंग विधि के उपयोग से विश्लेषण किया गया है। इस परिकल्पना के परीक्षण में तीन कारकों को शामिल किया गया है जिससे व्यवसाय के विविध स्वरूपों (नौकरी, स्वरोजगार तथा कृषि एवं पशुपालन) में आरसेटी लाभार्थियों के दृष्टिकोण को उनकी वरीयता के आधार पर सबसे बेहतर स्वरूप माध्यम को इंगित किया जा सके।

तालिका संख्या 3 जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि

	उत्तरदाता	आवृति	प्रतिशत
लिंग	महिला	132	44.0
	पुरूष	168	56.0
	कुल	300	100
आयु	18–25	95	31.7
	26–35	139	46.3
	36–40	54	18.0
	41–45	12	4.0
	कुल	300	100
शिक्षा	माध्यमिक	15	5.0
	हाईस्कूल	72	24.0
	इण्टरमीडिएट	123	41.0
	स्नातक / परास्नातक	73	24.3

	अन्य	17	5.7
	कुल	300	100
व्यवसाय	विद्यार्थी	51	17.0
	नौकरी	101	33.7
	स्वरोजगार / उद्यमी	134	44.7
	ग्रहणी	14	4.7
	कुल	300	100

तालिका संख्या 3 में उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकी पृष्ठभमि को लिंग, आयु, शिक्षा, और व्यवसाय की श्रेणी में वर्गीकृत कर उनके मूल आवृति को प्रतिशत के साथ प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या 4 जीविकोपार्जन हेतु सबसे बेहतर विकल्प पर योजनावार उत्तरदाताओं की वरीयता का विवरण

कारक	आरसेटी के लाभार्थियों द्वारा अंकित वरीयता (आवृति)			
	रैंक 1	**रैंक 2**	**रैंक 3**	**योग**
नौकरी	50	70	27	**147**
स्वयं का रोजगार	70	65	12	**147**
कृषि एवं पशुपालन	27	12	108	**147**
योग	**147**	**147**	**147**	

स्रोत– प्राथमिक आंकड़े

उपरोक्त तालिका संख्या 4 आरसेटी कौशल विकास कार्यक्रम के उत्तरदाताओं के द्वारा दर्ज की गई वरीयता की आवृति को दर्शाता है।

तालिका संख्या 5 गैरेट सारणी गणना मूल्य

रैंक	गैरेट सारणी मूल्य / प्रतिशत	वर्तमान स्थिति (x)
1	100 * (1-0.5) ÷3 = 16.67%	69
2	100 * (2-0.5) ÷3 = 50 %	50
3	100 * (3-0.5) ÷3 = 83.33 %	31

यह तालिका आरसेटी के उत्तरदाताओं के वरीयता को उत्तरदायी विविध कारकों पर कुल उत्तरदाताओं के वरीयता को **गैरेट रैंकिंग तकनीक** से गणना करके गैरेट सारणी तालिका के स्कोर में परिवर्तित कर वर्तमान स्थिति को दर्शाता है।

तालिका संख्या 6 आरसेटी उत्तरदाताओं के वरीयता का मध्यमान एवं गैरेट रैंकिंग गणना

कारक	**रैंक**	**1**	**2**	**3**	**कुल स्कोर**	**गैरेट माध्य मूल्य**	**रैंक माध्य**
	X	69	50	31			
नौकरी	F	50	70	27	147	52.97	**II**
	Fx	3450	3500	837	7787		
स्वयं का रोजगार	F	70	65	12	147	57.48	**I**
	Fx	4830	3250	372	8452		
कृषि एवं पशुपालन	F	27	12	108	147	39.53	**III**
	Fx	1863	600	3348	5811		

स्रोतः–परिकलित आंकड़े

विश्लेषण एवं निर्वचन– उपरोक्त तालिका संख्या 6 मे आरसेटी लाभार्थियों की जीविकोपार्जन हेतु व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों संलग्नता में बेहतर विकल्प के वरीयता (धारणा) को (x) कुल उत्तरदाताओं के दर्ज वरीयता को गैरेट रैंकिंग विधि की सहायता से गणना करके गैरेट सारणी तालिका के स्कोर में परिवर्तित कर वर्तमान स्थिति को दर्शाता है। (f) आरसेटी प्रतिवादियों के प्रतिक्रिया की आवृति को दर्शाता है। (fx) प्रयुक्त किये गए कारकों के लिए कुल स्कोर (अंको) को प्रदर्शित करता है कुल स्कोर का उपयोग गैरेट औसत माध्य की गणना हेतु किया जाता है। गैरेट माध्य मूल्य की गणना कुल अंकों से विभाजित करके की जाती है जैसा उपरोक्त तालिका में गणना की गई है इसके फलस्वरूप प्रतिवादियों के दर्ज प्रतिक्रिया के अनुसार सारणी में उच्चतम माध्य प्राप्त करने वाले को उच्चतम रैंक और निम्नतम माध्य प्राप्त करने वाले को निम्नतम रैंक प्रशासित किया जाता है।

निष्कर्ष– परिकल्पना के परीक्षण हेतु गैरेट रैंकिंग विधि को उपयोग मे लिया गया है और परिकल्पना के परीक्षण के परीणामस्वरूप यह निष्कर्ष ज्ञात है कि पीएमकेवीवाई के लाभार्थियों ने 57.48 प्रतिशत के साथ स्वरोजगार को प्रथम वरीयता प्रदान की है और नौकरी को 52.97 के साथ द्वितीय वरीयता तथा कृषि एवं पशुपालन को 39.53 प्रतिशत के साथ तृतीय वरीयता प्रदान की है। आरसेटी योजनाओं के लाभार्थियों के वरीयता में अन्तर के साथ प्रथम वरीयता स्वरोजगार एवं द्वितीय वरीयता नौकरी तथा तृतीय और आखरी वरीयता कृषि और पशुपालन के प्रति इंगित किया गया है।

शोध परिणाम

आरसेटी योजना ने उत्तराखण्ड के भौगोलिक एवं दुगर्म पवर्तीय क्षेत्र की विषमताएं होने के बाद भी इस योजना ने बेहतर प्रर्दशन किया है यह इनडोर आउटडोर कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ लाभार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों विशेषतः स्वरोजगार संलग्नता की सुविधा भी प्रदान की गई है जिससें युवाओं को रोजगार के अवसर के साथ उनकी क्षमता का विकास हुआ है। कुमाऊँ मण्डल के विभिन्न जनपदों से से एकत्रित आकंड़ों के विश्लेषण के माध्यम से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए है कि योजना लक्षित परिणामों हेतु प्रशिक्षण प्रदान करने में प्रतिबद्ध रही है सरकार इस योजना के माध्यम से अधिक से अधिक युवाओं को स्वरोगार एवं रोजगार हेतु प्रेरित कर रही है। शोध में प्राथमिक समंकों के एकत्रीकरण के अवलोकनार्थ अधिकांश उत्तरदाताओं ने बेहतर जीविकोर्पाजन के विकल्प में स्वरोजगार को प्रथम वरीयता और नौकरी को द्वितीय तथा कृषि आधारित गतिविधियों एवं कृषि एवं पशुपालन को सबसे निम्नतम (आखरी) वरीयता दर्ज की है जिसका सारांश निम्नांकित है।

व्यवसाय के विभिन्न स्वरूप के संलग्नता में लाभार्थियों की वरीयता	गैरेट रैंकिंग (वरीयता)		
	रैंक 1	**रैंक 2**	**रैंक 3**
	स्वरोजगार	नौकरी	कृषि एवं पशुपालन

सुझाव

कृषि एवं कृषि आधारित गतिविधियों से पलायन को रोकना अधिकांश भारतीय श्रमबल कृषि व सम्बंधित क्षेत्रों से उद्योग तथा सेवा क्षेत्र में पलायन कर रहा है। इस **प्रतिभा पलायन की चुनौती से निपटने हेतु कौशल में निवेश के साथ वित्त पोषण सहायतार्थ आवश्यकता को रेखांकित किया है।** शोध में प्राथमिक समंकों के एकत्रीकरण के अवलोकनार्थ अधिकांश उत्तरदाताओं ने बेहतर जीविकोर्पाजन के विकल्प में स्वरोजगार को प्रथम वरीयता और नौकरी को द्वितीय तथा कृषि आधारित गतिविधियों एवं कृषि एवं पशुपालन को सबसे निम्नतम (आखरी) वरीयता दर्ज की है। **युवाओं के कृषि एवं पशुपालन जैसे जीविकोपार्जन के विकल्प से पलायन चिंता का विषय है अर्थात कृषि एवं कृषि आधारित गतिविधियों के ओर युवाओं को आकर्षित करने हेतु बेहतर प्रयास की अति आवश्यकता है।** धातव्य है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। वर्तमान में भारत में कृषि क्षेत्रफल एवं जोत कम होता जा रहा है। युवाओं की कृषि कार्यों में इच्छा दूर जा रही है।

इस ओर सरकारी प्रयासों कों दृढ़ संकल्पित रूप से प्रयासरत होने की आवश्यकता है। बेहतर विकल्प की तलाश हेतु जिसमें गांव स्तर पर उन्नत बीजों की पहुँच निर्धारित करना, आधुनिक तकनीकी से लैस करना, जागरूकता व्यापक (सघन) करना तथा उन्ही क्षेत्रों में जाकर प्रशिक्षण प्रदान करना इत्यादि में प्रयासरत होने की आवश्यकता को महसूस किया गया है।

सन्दर्भ

Kotawadekar, S. V. (2018). Skill India (Need, Challenges). *International Journal of Creative Research Thoughts*, ISSN. 2320-2882, Vol. 6, Issue 2, Source From- *http://ijcrt.org/paper/IJCRT1812510.pdf*

Kumar, A., & Chandel, D. S. (2022). Development of Skill Innovation in Opportunities. *International Journal of Machanical Enginearing*, ISSN. 0974-5823, vol. 7, pp. 497-499

Kumra, R. (2020). Role of RSETIS Rural Self-employment Training Institute in Empowering Rural Youth Towards Entrepreneurship in Punjab. http://hdl.handle.net/10603/307115

Bartlett, J. E and et al. (2001). Organization research: determining appropriate sample size in survey research. Source at- https://www.opalco.com/wp-content/uploads/2014/10/reading-sample-size1.pdf

Chakravorty, B., & Bedi, A. S. (2019). Skills Training and Employment Outcomes in Rural Bihar. *Indian Journal of Labour Economics*, 62(2), 173–199. https://doi.org/10.1007/s41027-019-00167-8

Kumar, A., & Chandel, D. S. (2022). Development of Skill Innovation in Opportunities. *International Journal of Machanical Enginearing*, ISSN. 0974-5823, vol. 7, pp. 497-499

Kumar, H. (2020). Skill Development For Self Employment In India. *Skill India: A catalyst to Nation Building. Empyreal Publishing House.* ISBN.978—81-946373-4-9.

Misra, S. K. (2015). Skill Development: A Way to Leverage the Demographic Dividend in India. *GSTF Journal on Business Review (GBR)* Vol.4, No.2.

Sharma, Vandana. (2016). Role of PNBRSETI (Narnaul) in Women Entrepreneurship Development in Mohindergarh District Haryana. *Indian Journal of Applied Research*, Vol.6 (6).

Sinha, P. K. (2016). Assessment of Capacity Building Programs of RUDSETI for Self-employment among Rural Youth. Delhi University.

Sundram, K. (2018). Integrating Skill Employment Economic Development in India: The Challenges And Prospects. *OJAS Expanding The knowledge Horizon, An International Journal of Research Management*. ISSN. 2279-0373. Issue. 7, Page no. 22-29

पटेल, एन. (2022). ''रोजगार और सम्पन्नता के लिए ग्रामीण उद्योग को बढ़ावा'' *कुरूक्षेत्र.पे. 06.*

मौर्य, ए. के. और शुक्ल, जे. एस. (2022) ग्रामीण विकास मे कौशल विकास की भूमिका एव अपेक्षाओं का अवलोकनार्थ अध्ययन *international journal of reviewed research in social sciences* ISSN. 2454-2687. 10(4) 145-2

यादव, एन. (1989). ''रोजगार कार्यक्रमों में ग्रामीण युवाओं की सहभागिता''